Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 18, Issue No. 7, December-2021, ISSN 2230-7540

भक्तिकाल के प्रमुख कवियों के व्यक्तित्व का अध्ययन

राजेन्द्र कुमार पिवहरे*
सहायक प्राध्यापक (हिन्दी)
शासकीय महाविद्यालय वेंकटनगर जिला - अनूपपुर(म.प्र.)
अवधेश प्रताप सिंह वि०वि०रीवा (म.प्र.)

सार– ***भक्तिकाल के प्रमुख कवियों के व्यक्तित्व का वर्णन काव्य और संगीत का समन्वित समीकरण यदि कहीं अपने आकर्षण के रूप में दिखाई देता है तो भक्तिकालीन काव्य में लय, ताल, स्वर,यति गति आदि की साधना के बाल पद शैली में इन कवियों ने जो कुछ भी रचा वह परवर्ती कवियों के लिए अनुकरणीय बन गया। इस युग की रचनाओं में काव्य एवं संगीत का सुंदर समन्वय देखा जा सकता है भक्ति काल का अवलोकन करके मध्यकालीन भारतीय संस्कृति का परिचय प्राप्त किया जा सकता है।***

मुख्यशब्द– ***भक्ति, काव्य, कवि, व्यक्तित्व, रचना***

----------X----------

प्रस्तावना

हिंदी साहित्य में भक्ति काल अपना एक अहम और महत्वपूर्ण स्थान रखता है। आदिकाल के बाद आये इस युग को पूर्व मध्यकाल भी कहा जाता है। जिसकी समयावधि 1375 ईव से 1700 ईव तक की मानी जाती है। यह हिंदी साहित्य का श्रेष्ठ युग है। जिसको जॉर्ज ग्रियर्सन ने स्वर्णकाल, श्यामसुन्दर दास ने स्वर्णयुग, आचार्य राम चंद्र शुक्ल ने भक्ति काल एवं हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लोक जागरण कहा। सम्पूर्ण साहित्य के श्रेष्ठ कवि और उत्तम रचनाएं इसी युग में प्राप्त होती हैं। दक्षिण में आलवार बंधु नाम से कई प्रख्यात भक्त हुए हैं। इनमें से कई तथाकथित नीची जातियों के भी थे। वे बहुत पढे-लिखे नहीं थे, परंतु अनुभवी थे। आलवारों के पश्चात दक्षिण में आचार्यों की एक परंपरा चली जिसमें रामानुजाचार्य प्रमुख थे। रामानुजाचार्य की परंपरा में रामानंद हुए।

उनका व्यक्तित्व असाधारण था। वे उस समय के सबसे बड़े आचार्य थे। उन्होंने भक्ति के क्षेत्र में ऊंच-नीच का भेद तोड़ दिया। सभी जातियों के अधिकारी व्यक्तियों को आपने शिष्य बनाया। उस समय का सूत्र हो गयाः महाप्रभु वल्लभाचार्य ने पुष्टि-मार्ग की स्थापना की और विष्णु के कृष्णावतार की उपासना करने का प्रचार किया। उनके द्वारा जिस लीला-गान का उपदेश हुआ उसने देशभर को प्रभावित किया। अष्टछाप के सुप्रसिध्द कवियों ने उनके उपदेशों को मधुर कविता में प्रतिबिंबित किया। इसके उपरांत माध्व तथा निंबार्क संप्रदायों का भी जन-समाज पर प्रभाव पड़ा है। साधना-क्षेत्र में दो अन्य संप्रदाय भी उस समय विद्यमान थे। नाथों के योग-मार्ग से प्रभावित संत संप्रदाय चला जिसमें प्रमुख व्यक्तित्व संत कबीरदास का है। मुसलमान कवियों का सूफीवाद हिंदुओं के विशिष्टाद्वैतवाद से बहुत भिन्न नहीं है। कुछ भावुक मुसलमान कवियों द्वारा सूफीवाद से रंगी हुई उत्तम रचनाएं लिखी गईं। भक्ति-युग की चार प्रमुख काव्य-धाराएं मिलती हैं:

1. **निर्गुण भक्ति**
   - ज्ञानाश्रयी शाखा
   - प्रेमाश्रयी शाखा
2. **सगुण भक्ति**
   - रामाश्रयी शाखा
   - कृष्णाश्रयी शाखा

उद्देश्य

1. भक्तिकाल के प्रमुख कवियों के व्यक्तित्व का अध्ययन करना।

2. भक्तिकाल की अवधरणा का अध्ययन करना।

भक्तिकाल के प्रमुख कवियों के व्यक्तित्व का वर्णन निम्न है

www.ignited.in

1. कबीरदास (1398-1518) -

डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है कि साधना के क्षेत्र मे वे युग-युग के गुरु थे,उन्होने संत काव्य का पथ प्रदर्शन कर साहित्य क्षेत्र मे नव-निर्माण किया था।

कबीर दास ने स्वयं ग्रंथ नही लिखे, उन्होने मुह से बोला और उनके शिष्यों ने लिखा–

मासी कागद छूओ नहीं,

कलम गही नहीं हाथ।

कबीर के गुरु रमानन्द जी थे।

हजारी प्रसाद द्विवेदी जी ने लिखा है कि कबीरदास जी ने बोल-चाल की भाषा का ही प्रयोग किया है। भाषा पर कबीर जी का ज़बरदस्त अधिकार था। उस वक़्त बोल चाल कि भाषा मे'अवधी' प्रमुख थी।

कबीर की रचनाओं में अनेक भाषा के शब्द मिलते हैं- अरबी, फारसी, पंजाबी, बुंदेलखंडी, ब्रज भाषा,खड़ी बोली, अवधी आदि। यही कारण है इनकी भाषा को 'पँचमेल खिचड़ी' या 'साधुक्कड़ी' भाषा कहते हैं।

कबीर की कुछ पंक्तियाँ -

साखी- बन ते भागा बिहरे पड़ा,

करहा अपनी बान।

करहा बेदन कासों कहे,

को करहा को जान।।

मूर्तिपूजा को लक्ष्य करते हुए उन्होने कहा है -

पाहन पूजे हरि मिले, तो मै पुजौ पहार।

या ते तो चाकी भली, जासे पीसी खाय संसार।।

कबीर का व्यक्तित्व -

अ). आकर्षक वक्ता -

कबीर ने कविता लिखने की प्रतिज्ञा करके अपनी बातें नहीं कहीं थी। उनकी छंदयोजना, उचित वैचित्र्य और अलंकार विधान पूर्ण रूप से स्वाभाविक एवं अयत्नसाधित है।

अपने अनन्य साधारण व्यक्तित्व के कारण ही वे सहृदय को आकृष्ट करते हैं।

ब). सादगी और सहज भाव -

सादगी और सहज भाव पर निरंतर ज़ोर देते रहना।

बाह्य धर्मचारों की निर्मम आलोचना।

स). महान समाज सुधारक -

सभी धर्मों के बाह्य आचारों और अंतर -संस्कारों में कुछ न कुछ विशेष देखना और सब आचारों - संस्कारों के प्रति सम्मान की दृष्टि उत्पन्न करना ही यह भाव है। कबीर इनके कठोर विरोधी थे। उन्हे अर्थहीन आचार पसंद नही थे।कबीर बाह्य आचार एवं संस्कार से मुक्त मनुष्यता को ही प्रेमभक्ति का पत्र मानते थे।

द). धर्मगुरु -

कबीर धर्मगुरु थे। इसीलिए उनकी वाणियों का आध्यात्मिक रस ही आस्वाद्य होना चाहिए, परंतु विद्वानों ने नाना रूप मे उन वाणियों का अध्ययन एवं उपयोग किया है।

कबीर की रचनाएँ -

कबीर की वाणी का संग्रह 'बीजक'के नाम से प्रसिद्ध है। इसके तीन भाग हैं -

1. रमैनी
2. सबद
3. साखी

इसमें वेदान्त तत्व, हिन्दू - मुसलमान को फटकार, संसार की अनित्यता, हृदय की शुद्धि, प्रेमसाधना की कठिनता, माया की प्रबलता, मूर्तिपूजा, तीर्थान्त आदि की असारता, हज, नमाज, व्रत, आराधना की गौणता आदि अनेक प्रसंग हैं। सांप्रदायिक शिक्षा एवं सिद्धान्त के उपदेश मुख्यतः साखी के भीतर हैं।

बीजक -

www.ignited.in

इसमें 84 रमेनियाँ हैं, ये चौपाई छंद मे लिखी गयी हैं। कबीरदास के सिद्धांतों की जानकारी का सबसे उत्तम साधन है साखियाँ।

अवधू और अवधूत -

भारतीय साहित्य मे ये अवधू शब्द कई संप्रदायों के सिद्ध आचार्यों के अर्थ मे व्यवहुत हुआ है।

साधारणतः जागतिक द्वंद्वों से अतीत, मनपमान विवर्जित, पाहुचे हुए योगी को अवधूत कहा जाता है।

यह शब्द मुख्यतः तंत्रिकों, सहज यानियों और योगियों का है। तंत्र ग्रन्थों मे चार प्रकार के अवधुतों की चर्चा है-

ब्रहमावधूत, शैवावधूत, भक्तावधूत, हंसावधूत - जो पूर्ण होते हैं - परमहंस, जो अपूर्ण होते हैं - परिव्राजक

2. नामदेव

जन्म- 26-अक्टूबर -1270

मृत्यु- 3-जुलाई -1350

गुरु का नाम – "विसोबा खेचर"

जाति- दरजी

रचना- अभंग (मराठी), गुरु ग्रंथ साहिब में (हिंदी) मुखबानी नामक पुस्तक में इनकी रचनाएँ संग्रहित हैं।

जीवन व्यक्तित्व-

संत चोखामेळा (1300-1400): महाराष्ट्र के संत शिरोमणि चोखामेला ने कई अभंग लिखे हैं। संत नामदेव को उनका गुरु कहा जाता है। चोखामेला का जन्म महाराष्ट्र के गरीब परिवार में जन्म हुआ। इनका परिवार भगवान विट्ठल का परम भक्त था। ये संत ज्ञानेश्वर के समकालीन थे और उम्र में उनसे 5 साल बड़े थे। नामदेव ष्वारकरी संप्रदाय के प्रमुख संत माने जाते हैं। पंढरपुर के विट्ठल (विठोबा) की उपासना किया करते थे। दीक्षा के उपरांत इनकी विट्ठलभक्ति सर्वव्यापक हो गई। महाराष्ट्रीय संत परंपरा के अनुसार इनकी निर्गुण भक्ति थी, जिसमें सगुण निर्गुण का कोई भेदभाव नहीं था। उन्होंने मराठी में कई सौ अभंग और हिंदी में सौ के लगभग पद रचे हैं। अभंग विट्ठल या विठोबा की स्तुति में गाये गये छन्दों को कहते हैं। महाराष्ट्र के वारकरी सम्प्रदाय के संतों ने 13वीं सदी के दौरान समाज में अलख जगाने के जो छंद क्षेत्रीय भाषा में गाये, उन्हें अभंग के नाम से जाना जाता है। यह एक प्रकार से हिंदी के छंद की तरह है। मराठी संत-परंपरा में तो वह सर्वाधिक पूज्य संतों में हैं. मराठी अभंगों(विशेष छंद) के जनक होने का श्रेय भी उन्हीं को प्राप्त है. उत्तर-भारत में विशेषकर पंजाब में उनकी ख्याति इतनी अधिक रही कि सिखों के प्रमुख पूज्य ग्रंथ गुरु ग्रंथ साहिब में उनकी वाणी संकलित है, जो प्रतिदिन अब भी बडी श्रद्धा से गाई जाती है. कुछ रचनाये निम्न है।

- जउ गुरदेउ त मिलै मुरारि
- अपुने रामहि भजु रे मन आलसीआ
- भैरऊ भूत सीतला धावै
- गहरी करिके नीब खुदाई
- माइ न होती बापु न होता
- श्लोक

हरि हरि करत मिटे सभि भरमा,

हले यारां हले यारां खुसिखबरी।

हसत खेलत तेरे देहुरे आइआ।।

3. रैदास -

जन्म- उत्तर प्रदेश मे बनारस

वाणी- भक्ति की सच्ची भावना, समाज के व्यापक हित की कामना ,तथा मानव प्रेम से ओत-प्रोत होती थी।

रचना- "गुरुग्रंथ साहब"

अलंकार- उपमा, रूपक

जीवन व्यक्तित्व-

इसलिए उसका श्रोताओं के मन पर गहरा प्रभाव पड़ता था। उनके भजनों तथा उपदेशों से लोगों को ऐसी शिक्षा मिलती थी जिससे उनकी शंकाओं का सन्तोषजनक समाधान हो जाता था और लोग स्वत: उनके अनुयायी बन जाते थे।रैदास नाम से विख्यात संत रविदास का जन्म सन् 1388 (इनका जन्म कुछ विद्वान 1398 में हुआ भी बताते हैं) को बनारस में हुआ था। रैदास कबीर के समकालीन हैं। रैदास की ख्याति से प्रभावित होकर सिकंदर लोदी ने इन्हें दिल्ली आने का निमंत्रण भेजा था। मध्ययुगीन साधकों में रैदास का विशिष्ट स्थान

है।भक्तिकालीन संत कवि। मीराबाई रैदास जी को अपना गुरु मानती थीं। गुरु रविदास की कुछ रचनाएँ श्री गुरु ग्रंथ साहिब में संकलित की गई हैं।रैदास की वाणी भक्ति की सच्ची भावना, समाज के व्यापक हित की कामना तथा मानव प्रेम से ओत-प्रोत होती थी। इसलिए उसका श्रोताओं के मन पर गहरा प्रभाव पड़ता था। उनके भजनों तथा उपदेशों से लोगों को ऐसी शिक्षा मिलती थी जिससे उनकी शंकाओं का सन्तोषजनक समाधान हो जाता था और लोग स्वत: उनके अनुयायी बन जाते थे।

रैदास को उपमा और रूपक अलंकार विशेष प्रिय रहे हैं। सीधे-सादे पदों में संत कवि ने हृदय के भाव बड़ी सफ़ाई से प्रकट किए हैं। इनका आत्मनिवेदन, दैन्य भाव और सहज भक्ति पाठक के हृदय को उद्वेलित करते हैं। रैदास के चालीस पद सिखों के पवित्र धर्मग्रंथ "गुरुग्रंथ साहब" में भी सम्मिलित हैं।

रैदास कनक और कंगन माहि जिमि अंतर कछु नाहिं।

तैसे ही अंतर नहीं हिन्दुअन तुरकन माहि।।

स्वभाव

उनके जीवन की छोटी-छोटी घटनाओं से समय तथा वचन के पालन सम्बन्धी उनके गुणों का पता चलता है। एक बार एक पर्व के अवसर पर पड़ोस के लोग गंगा-स्नान के लिए जा रहे थे। रैदास के शिष्यों में से एक ने उनसे भी चलने का आग्रह किया तो वे बोले, गंगा-स्नान के लिए मैं अवश्य चलता किन्तु एक व्यक्ति को जूते बनाकर आज ही देने का मैंने वचन दे रखा है। यदि मैं उसे आज जूते नहीं दे सका तो वचन भंग होगा। गंगा स्नान के लिए जाने पर मन यहाँ लगा रहेगा तो पुण्य कैसे प्राप्त होगा ? मन जो काम करने के लिए अन्त:करण से तैयार हो वही काम करना उचित है। मन सही है तो इसे कठौते के जल में ही गंगास्नान का पुण्य प्राप्त हो सकता है। कहा जाता है कि इस प्रकार के व्यवहार के बाद से ही कहावत प्रचलित हो गयी कि –"मन चंगा तो कठौती में गंगा"।

रैदास ने ऊँच-नीच की भावना तथा ईश्वर-भक्ति के नाम पर किये जाने वाले विवाद को सारहीन तथा निरर्थक बताया और सबको परस्पर मिलजुल कर प्रेमपूर्वक रहने का उपदेश दिया। वे स्वयं मधुर तथा भक्तिपूर्ण भजनों की रचना करते थे और उन्हें भाव-विभोर होकर सुनाते थे। उनका विश्वास था कि राम, कृष्ण, करीम, राघव आदि सब एक ही परमेश्वर के विविध नाम हैं। वेद, कुरान, पुराण आदि ग्रन्थों में एक ही परमेश्वर का गुणगान किया गया है।

कृस्न, करीम, राम, हरि, राघव, जब लग एक न पेखा।

वेद कतेब कुरान, पुरानन, सहज एक नहिं देखा।।

उनका विश्वास था कि ईश्वर की भक्ति के लिए सदाचार, परहित-भावना तथा सद्व्यवहार का पालन करना अत्यावश्यक है। अभिमान त्याग कर दूसरों के साथ व्यवहार करने और विनम्रता तथा शिष्टता के गुणों का विकास करने पर उन्होंने बहुत बल दिया।

4. गुरु नानक

जन्म- 15 अप्रैल 1469

मृत्यु- 22 सितंबर 1539

शिक्षा - नाम जपो, किरत करो और वंड छको।

रचना - निरबैर, अकाल मूरति, अजूनी, सैभं गुर प्रसादि।।

भाषा - पंजाबी भाषा और गुरुमुखी लिपि

कृति – "पद" काव्य रचना की गेय शैली है।

स्वभाव- धीर-गंभीर

जीवन व्यक्तित्व-

गुरु नानक देव जी का जन्म 15 अप्रैल, 1469 में तलवंडी नामक स्थान पर हुआ था। बाद में तलवंडी का नाम ननकाना साहब पड़ा, जो पाकिस्तान के पंजाब प्रांत में है ननकाना साहिब, पाकिस्तान के पंजाब प्रान्त में स्थित एक शहर है। इसका वर्तमान नाम सिखों के पहले गुरू गुरू नानक देव जी के नाम पर पड़ा है। इसका पुराना नाम श्राय-भोई-दी-तलवंडी" था। यह लाहौर से 8० किमी दक्षिण-पश्चिम में स्थित है। गुरु नानक जी की तीन बड़ी शिक्षा खुशहाली से जीने का मंत्र देती हैं। ये शिक्षा है- नाम जपो, किरत करो और वंड छको। गुरु साहब ने "गुरुग्रंथ साहब" नामक ग्रंथ की रचना पंजाबी भाषा और गुरुमुखी लिपि में की। गुरु नानक जी सिख समुदाय के पहले गुरु थे. उन्होंने ही सिख धर्म की नींव रखी थी. हर साल कार्तिक मास की पूर्णिमा तिथि को गुरु नानक जी के जन्मदिवस के रूप में मनाया जाता है. गुरु नानक जी को उनके अनुयायी बाबा नानक और नानकशाह के नाम से भी संबोधित करते हैं "पद" काव्य रचना की गेय शैली है। गुरुनानक जी के विचारों से समाज में परिवर्तन हुआ। नानक जी ने करतारपुर (पाकिस्तान) नामक स्थान पर एक नगर को बसाया और एक धर्मशाला भी बनवाई। नानक जी की मृत्यु 22 सितंबर 1539 ईस्वी को हुआ। इन्होंने अपनी मृत्यु से पहले अपने शिष्य भाई लहना को अपना उत्तराधिकारी बनाया, जो बाद में गुरु अंगद देव नाम से जाने गए।

www.ignited.in

5. मालिक मुहम्मद जायसी -

जन्म -1397 ई. -1494 ई. के बीच (800 हिजरी -900 हिजरी)

मृत्यु -1542 ई.

ये जायस नगर के निवासी थे इसीलिए इन्हे जायसी भी कहा जाता है। जायस नगर का प्राचीन नाम उदयान था।

मुख्य रचनाएँ- पद्मावत, आख़री कलाम, चित्ररेखा, कहरनामा, अखरावट (अंतिम रचना)

भाषा - अवधी

छंद - दोहा - चौपाई

शैली - आलंकारिक शैली, प्रतिकात्मक शैली, शब्द चित्रात्मक शैली, अतिशयोक्ति प्रधान शैली

पद्मावत - इसमें चित्तौड़गढ़ के राजा रत्नसेन और सिंहलद्वीप की राजकुमारी पद्मावती की प्रेमकथा वर्णित है। कवि ने कथानक इतिहास से लिया है परंतु प्रस्तुतीकरण काल्पनिक है। यह मसनवी शैली में लिखा गया है। यह एक प्रबंध काव्य है। यह काव्य 57 खण्डों मे लिखा गया है। भाषा अवधी है। चौपाई छंद में लिखा गया है।

भाव पक्ष - जायसी रससिद्ध कवि हैं। जायसी ने भारतीय प्रेमाख्यानों को अपने काव्य का विषय बनाया है। जायसी हिन्दी के प्रथम महाकाव्य के रचयिता हैं।

6. शेख कुतुबन

जन्म -1515 ईस्वी

मृत्यु -1744 ई.

ग्रंथ - मृगावती

भाषा - अवधी

छंदों - दोहा, चौपाई, सोरठा, अरिल्ल

शैली - कड़वक।

गुरु -सुहरावर्दी सम्प्रदाय के शेख़ बुढ़न

जीवन व्यक्तित्व-

"मिरगावती" में कुतबन ने चंद्रनगर के राजा गणपतिदेव के राजकुमार और कंचनपुर के राजा रूपमुरारि की कन्या मृगावती की प्रेमकथा का वर्णन किया है। इस कहानी के द्वारा कवि ने प्रेममार्ग के त्याग और कष्ट का निरूपण करके साधक के भगवत्प्रेम का स्वरूप दिखाया है।इन्हें शेख़ कुतुबन के नाम से जाना जाता है। इनका जन्म 1515 ईस्वी (1515) में हुआ माना जाता है। कुतुबन शेख बुरहान के शिष्य थे और शेरशाह के पिता हुसैन शाह के समकालीन थे। ये सूफी प्रेम काव्य परम्परा के कवि थे। इनका प्रसिद्ध ग्रंथ मृगावती है। इस ग्रंथ में लौकिक प्रेम की आड़ में अलौकिक प्रेम की बडी सुन्दर अभिव्यंजना हुई है।

कवि की भाषा अवधी तथा छंद दोहा एवं चौपाई है। "काशी" (वर्तमान बनारस) में हरतीरथ मुहल्ले की चौमुहानी से पूरब की ओर लगभग एक फलाँग की दूरी पर "कुतबन शहीद" नामक एक मुहल्ला है। वहीं एक मज़ार है, जो कुतबन की मज़ार के नाम से प्रसिद्ध है। कदाचित वह इन्हीं कुतबन की क़ब्र है।कुतबन हिन्दी के प्रसिद्ध सूफ़ी कवि थे, जिन्होंने मौलाना दाऊद के " चन्दायन" की परम्परा में सन 1503 ई. में "म्रगावती" नामक प्रेमाख्यानक काव्य की रचना की। "म्रगावती" किसी पूर्व प्रचलित कथा के आधार पर लिखा गया है। इसमें दोहा, चौपाई, सोरठा, अरिल्ल आदि छन्दों का प्रयोग किया गया है, किन्तु इसकी शैली प्राकृत काव्यों का अनुकरण पर कड़वक वाली है। अपनी रचना " म्रगावती" में कुतबन ने चन्द्रनगर के राजा गणपतिदेव के राजकुमार और कँचनपुर के राजा रूपमुरारी की कन्या मृगावती की प्रेमकथा का वर्णन किया है। इस कहानी के द्वारा कवि ने प्रेममार्ग के त्याग और कष्ट का निरूपण करके साधक के भगवत् प्रेम का स्वरूप दिखाया है। बीच-बीच में सूफ़ियों की शैली के बड़े सुन्दर रहस्यमय आध्यात्मिक आभास हैं।

7. तुलसीदास -

जन्म -1532 ई. (राजपुर उ.प्र.)

मृत्यु -1623 ई. (काशी)

मुख्य रचनाएँ - रामचरितमानस, दोहावली, कवितावली, गीतावली, विनय पत्रिका, हनुमान चालीसा आदि।

भाषा - अवधी

गुरु - आचार्य रामानन्द

रामायण के रचयिता - महर्षि वाल्मीकि

तुलसीदास द्वारा रचित ग्रंथो की संख्या 22 बताई जाती है।

रचनाएँ - रामचरितमानस, दोहावली, गीतावली, कवितावली, विनयपत्रिका, कृष्ण - गीतावली, हनुमान चालीसा,वैराग्य संदीपनी, जानकी मंगल, पार्वती मंगल, बरवै रामायण आदि।

8. नाभादास

जन्म-1570 अनुमानित

जन्मस्थान- सांप्रदायिक मान्यता के अनुसार दक्षिण भारत में, शैशव में पिता की मृत्यु और अकाल के कारण माता के साथ जयपुर (राजस्थान) में प्रवास।दुर्योगवश माता से भी बिछोह।

शिक्षा- गुरु और प्रतिपालक की देख-रेख में स्वाध्याय, सत्संग द्वारा ज्ञानार्जन।

अभिरुचि- लोकभ्रमण, भगवद्भक्ति, काव्य रचना, वैष्णव दर्शन-चिंतन में विशेष रुचि।

दीक्षागुरु- स्वामी अग्रदास (अग्रअली), जो स्वामी रामानंद की शिष्य परम्परा के प्रसिद्ध कवि थे

स्थाई निवास- वृंदावन।

भाषा - व्रजभाषा,

कृति - ग्रंथ –"भक्तमाल", "अष्टयाम", श्रामभक्ति संबंधी स्फुट पद"

जीवन व्यक्तित्व-

कवि नाभादास की पारिवारिक-सामाजिक पृष्ठभूमि अधिकतर विद्वानों के मुताबिक दलित वर्ग की थी। नाभादास सगुणोपासक रामभक्त कवि थे। उनकी भक्ति प्रचलित गमभक्ति से थोड़ी भिन्न थी। उसमें मर्यादा के स्थान पर माधुर्यभाव का पुट था। वे गोस्वामी तुलसीदास के समकालीन थे और स्वामी रामानंद की ही शिष्य परंपरा के संत कृष्ण दास पयहारी के प्रशिष्य और भक्तकवि अग्रदास के शिष्य थे। इस तरह वे वैष्णवों के एक निश्चित संप्रदाय में दीक्षित थे, किंतु उनकी सोच और मान्यताओं में किसी तरह की संकीर्णता नहीं थी। पक्षपात, दुराग्रह या कट्टरता से वे पूर्णतया मुक्त एक भावुक, सहृदय, विवेकसंपन्न सच्चे वैष्णव थे। प्रसिद्ध कृति "भक्तमाल" भक्तकवि नाभादास के शील, सोच और मानस का निर्मल दर्पण है। अविचल भगवद्भक्ति, भक्तचरित्र और भक्तों की स्मृतियाँ; नाभादास का अनुभव-सर्वस्व यही है। गार्हस्थ्य, सामाजिक-सांसारिक जीवन, विस्तृत और जटिल मानव संबंध इत्यादि का उन्हें अनुभव नहीं था। वे एक विरक्त जीवन जीते आए संत थे।

स्पष्टतः उनके अनुभव के उस छोटे दायरे में ही उन्होंने अपनी अभिरुचि, ज्ञान, विवेक, भाव-प्रसार आदि के द्वारा प्रतिभा का प्रकर्ष उपस्थित कर दिया है।"भक्तमाल" जिसकी आगे परंपरा चल पड़ी, यह प्रमाणित करता है।भक्तिकाल के कवियों में स्वामी अग्रदास के शिष्य नाभादास का विशिष्ट स्थान है। अग्रदास ष्रसिक संप्रदाय" के संस्थापक आचार्य थे। उनका जन्म 16 वी शती का उत्तरार्द्ध बताया जाता हैं। नाभादास सगुणोपासक रामभक्त कवि थे। उनकी भक्ति प्रचलित गमभक्ति से थोड़ी भिन्न थी। उसमें मर्यादा के स्थान पर माधुर्यभाव का पुट था। वे गोस्वामी तुलसीदास के समकालीन थे और स्वामी रामानंद की ही शिष्य परंपरा के संत कृष्ण दास पयहारी के प्रशिष्य और भक्तकवि अग्रदास के शिष्य थे। इनका प्रसिद्ध ग्रंथ "भक्तमाल" संवत् 1642 के पीछे बना और संवत् 1769 में "प्रियादास" जी ने उसकी टीका लिखी। नाभादास कहते हैं कि कबीर जी ने चार वर्ण, चार आश्रम, छः दर्शन किसी की आनि कानि नहीं रखी। केवल श्री भक्ति (भागवत धर्म) को ही दृढ़ किया। वहीं " भक्ति के विमुख" जितने धर्म हैं, उन सबको "अधर्म" ही कहा है। उन्होंने सच्चे हृदय से सप्रेम भजन (भक्ति, भाव, बंदगी) के बिना तप, योग, यज्ञ, दान, व्रत आदि को तुच्छ बताया। तुलसीदास जी के संबंध में नाभा जी का प्रसिद्ध छप्पय है-

त्रोता काव्य निबंध करी सत कोटि रमायन।

इक अच्छर उच्चरे ब्रहमहत्यादि परायन॥

अब भक्तन सुख दैन बहुरि लीला बिस्तारी।

रामचरनरसमत्ता रहत अहनिसि व्रतधारी॥

संसार अपार के पार को सुगम रूप नौका लियो।

कलि कुटिल जीव निस्तारहित वाल्मीकि तुलसी भयो॥

9. सूरदास

सम्पूर्ण भारत में उनकी कृष्ण-भक्ति के लिए प्रसिद्ध प्राप्त है। वे भगवान श्रीकृष्ण के अनन्य भक्त थे। उनके अनुसार श्रीकृष्ण के अनुग्रह से मनुष्य को सद्गति मिल सकती है। अटल भक्ति कर्मभेद, जातिभेद, ज्ञान, योग से श्रेष्ठ है। सूरदास ने वात्सल्य, श्रृंगार और शान्त रसों को मुख्य रूप से अपनाया है। उन्होंने अपनी कल्पना और प्रतिभा के सहारे श्रीकृष्ण के बाल्य-रूप का अति सुंदर, सरस, सजीव और मनोवैज्ञानिक वर्णन

www.ignited.in

किया है। बालकों की चपलता, स्पर्धा, अभिलाषा, आकांक्षा का वर्णन करने में विश्व व्यापी बाल-स्वरूप का चित्रण किया है। बालकृष्ण की एक-एक चेष्टाओं के चित्रण में कवि कमाल की होशियारी एवं सूक्ष्म निरीक्षण का परिचय देते हैं।

हिन्दी साहित्य के श्रेष्ठ कृष्णभक्त कवि सूरदास का जन्म 1478 ई. के आस-पास हुआ था। इनकी मृत्यु अनुमानत:1583 ई. के आस-पास हुई। इनके बारे में 'भक्तमाल' और 'चौरासी वैष्णवन की वार्ता' में थोड़ी-बहुत जानकारी मिल जाती है। 'आईने अकबरी' और 'मुंशियात अब्बुलफजल' में भी किसी संत सूरदास का उल्लेख है, किन्तु वे बनारक के कोई और सूरदास प्रतीत होते हैं। अनुश्रुति यह अवश्य है कि अकबर बादशाह सूरदास का यश सुनकर उनसे मिलने आए थे। 'भक्तमाल' में इनकी भक्ति, कविता एवं गुणों की प्रशंसा है तथा इनकी अंधता का उल्लेख है। 'चौरासी वैष्णवन की वार्ता' के अनुसार वे आगरा और मथुरा के बीच साधु या स्वामी के रूप में रहते थे। वे वल्लभाचार्य के दर्शन को गए और उनसे लीलागान का उपदेश पाकर कृष्ण-चरित विषयक पदों की रचना करने लगे।

कालांतर में श्रीनाथ जी के मंदिर का निर्माण होने पर महाप्रभु वल्लभाचार्य ने इन्हें यहाँ कीर्तन का कार्य सौंपा. सूरदास के विषय में कहा जाता है कि वे जन्मांध थे। उन्होंने अपने को 'जन्म को आँधर' कहा भी है। किन्तु इसके शब्दार्थ पर अधिक नहीं जाना चाहिए। सूर के काव्य में प्रकृतियाँ और जीवन का जो सूक्ष्म सौन्दर्य चित्रित है उससे यह नहीं लगता कि वे जन्मांध थे। उनके विषय में ऐसी कहानी भी मिलती है कि तीव्र अंतर्द्वन्द्व के किसी क्षण में उन्होंने अपनी आँखें फोड़ ली थीं। उचित यही मालूम पड़ता है कि वे जन्मांध नहीं थे। कालांतर में अपनी आँखों की ज्योति खो बैठे थे। सूरदास अब अंधों को कहते हैं। यह परम्परा सूर के अंधे होने से चली है। सूर का आशय 'शूर' से है। शूर और सती मध्यकालीन भक्त साधकों के आदर्श थे। सूरदास जी द्वारा लिखित पाँच ग्रन्थ बताए जाते हैं:

1. सूरसागर - जो सूरदास की प्रसिद्ध रचना है। जिसमें सवा लाख पद संग्रहित थे। किंतु अब सात-आठ हजार पद ही मिलते हैं।

2. सूरसारावली

३. साहित्य-लहरी - जिसमें उनके कूट पद संकलित हैं।

4. नल-दमयन्ती

५. ब्याहलो

10. मीरांबाई

जन्म-1498

जन्म स्थान-कुड़की {मेड़ता}

पूरा नाम-मीराँ

पति-भोजराज 1516-1521,

पिता-राव रत्नसिंह

माता-वीर कुमारी

दादा-राव दूदा

मृत्यु-1557

मृत्यु स्थान-द्वारका

गुरु - संत रवि दस।

इन्होने 4 ग्रन्थों की रचना की है - बरसी का मायरा , गीत गोविंद टीका , राग गोविन्द , राग सोरठ मीराबाई के गीतों का संकलन मीराबाई की पदावली नामक ग्रंथ में किया गया है।

भाषा -राजस्थानी, ब्रज, गुजराती।

मीरांबाई अथवा मीराबाई हिन्दू आध्यात्मिक कवयित्री थीं, जिनके भगवान श्रीकृष्ण के प्रति समर्पित भजन उत्तर भारत में बहुत लोकप्रिय हैं। भजन और स्तुति की रचनाएँ कर आमजन को भगवान के और समीप पहुँचाने वाले संतों और महात्माओं में मीराबाई का स्थान सबसे ऊपर माना जाता है। मीरा का सम्बन्ध एक राजपूत परिवार से था। वे राजपूत राजकुमारी थीं, जो मेड़ता महाराज के छोटे भाई रतन सिंह की एकमात्र संतान थीं। उनकी शाही शिक्षा में संगीत और धर्म के साथ-साथ राजनीति व प्रशासन भी शामिल थे। एक साधु द्वारा बचपन में उन्हें कृष्ण की मूर्ति दिए जाने के साथ ही उनकी आजन्म कृष्ण भक्ति की शुरुआत हुई, जिनकी वह दिव्य प्रेमी के रूप में आराधना करती थीं। भक्तिकाल की महान विदुषी 'मीराँबाई' रचनाएँ निम्न है तथा कुछ भाव भक्ति की पंक्तिया निम् है

पायो जी मैंने नाम रतन धन पायो।

बस्तु अमोलक दी म्हारे सतगुरु, किरपा कर अपनायो।

जनम जनम की पूंजी पाई, जग में सभी खोवायो।

खरचौ नहिं कोई चोर न लेवै, दिन-दिन बढ़त सवायो।

सत की नाव खेवहिया सतगुरु, भवसागर तर आयो।

मीरा के प्रभु गिरधर नागर, हरख-हरख जस पायो।।

उपसंहार

काव्य शिल्प की दृष्टि से भक्ति काल का कार्य अत्यंत संपन्न है। कवियों की मूल प्रेरणा स्रोत भक्ति भाव होते हए भी कुछ संत कवियों को छोड़कर सभी उच्च कोटि के कवि। इन्होंने काव्यशास्त्र के अपने सम्यक ज्ञान का प्रयोग अपनी रचनाओं में किया है। इन कवियों ने रीतिकालीन कवियों के समान छंद और अलंकार का भले ही ध्यान नहीं रखा परंतु वह छंद अलंकार से वंचित भी नहीं रहे।शायद ही कोई अलंकार हो जिसका यह प्रयोग नहीं किए हों। तुलसी और सूर ने तो प्रस्तुत विधान का सौंदर्य निखार दिया है। काव्य और संगीत का समन्वित समीकरण यदि कहीं अपने आकर्षण के रूप में दिखाई देता है तो भक्तिकालीन काव्य में लय, ताल, स्वर,यति गति आदि की साधना के बाल पद शैली में इन कवियों ने जो कुछ भी रचा वह परवर्ती कवियों के लिए अनुकरणीय बन गया। इस युग की रचनाओं में काव्य एवं संगीत का सुंदर समन्वय देखा जा सकता है मीरा का कृष्ण प्रेम या कृष्ण भक्ति समर्पित व्यक्तित्व की सुन्दरतम झांकी सिद्ध हुई है। भक्ति काल का अवलोकन करके मध्यकालीन भारतीय संस्कृति का परिचय प्राप्त किया जा सकता है। भारतीय धर्म दर्शन संस्कृतिसलाहकार व्यवहार आदि का सुदृढ़ एवं सुंदर कलेवर इस युग के कार्यों में सुरक्षित है।

संदर्भ

1. अंश रामचंद्र, शुक्ल (2019). हिन्दी का इतिहास। काशी:विज्ञापनीय सभा। प्रेट्र 159.।
2. चंद्रकांता। "सूरदास (सूर जय शंकर प्रसाद) - चंद्रकांता". चंद्रकांथा डॉट कॉम। मूल से 19 वर्ष 2015 को पुरालेखित। अभिनंदन तिथि 10.2015.।
3. "क्या रामदास बैरागी कृष्ण भक्त सूरदास जी के पिता?". पंजाब केसरी। 2021-06-13। अभिनंदन तिथि 2021-06-14.
4. "सूरदास कृष्ण कृष्ण कृष्ण के बड़े भक्त हेक्स। पंजाब केसरी 2019.
5. हिन्दी साहित्य का इतिहास , रामचंद्र शुक्ल , नई दिल्ली, 85, आईएसबीएन: - 81-7714-083-3.
6. सांचारूभक्ति काव्यधारा "मीराबाई"। ignca.gov.in अभिनंदन तिथि 2021-07-30.।
7. हिन्दी साहित्य का सुबोर इत्तिस- बाबू अजीब राय। लोकार्पण- लक्ष्मी प्रकाश नारायरा अग्रराल। पृष्ठ 42 सींस्कर-2009-10 ई0 2: री, पृष्ठ-07।
8. हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतियास , सिंपादक मींधा (अध्यक्ष-डॉ नामर लसी) एन सीरी - 2018, पितृठ -47.।
9. डॉ0प्रफुल्ल कुमार, एसोसेर प्रोफेसर "हिन्दी साहित्य का इतिसा-भक्त काल" हिन्दी ववभाग , आर एस कॉलेज मोकामा, पारसलपुत्र विश्व विद्यालय पटना 2020।
10. 'तुलसी गंधावली ततीय खंड- नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी वि.सं. 2033।
11. तुलसी की जीवन भूमि- चन्द्राबली पाँडे नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी, वि. सं. 2019।
12. भक्ति का विकाप्त- डॉ. मुंशोर राम शर्माचौखंबा सीरीज़ वाराणसी प्रथम संस्करण - 2022.।

Corresponding Author

राजेन्द्र कुमार पिवहरे*

सहायक प्राध्यापक (हिन्दी)

शासकीय महाविद्यालय वेंकटनगर जिला - अनूपपुर(म.प्र.)

अवधेश प्रताप सिंह वि०वि०रीवा (म.प्र.)

www.ignited.in